VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

सामाजिक परिवर्तन और प्रगतिवादी सोच की धनी सावित्रीबाई फुले

डॉ. हरपाल बौद्ध

एसोसिएट प्रोफ़ेसर, इतिहास विभाग
गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद, गुजरात
(मो) ७६००३६३७२७

सारांश:

आधुनिक भारत का इतिहास सामाजिक क्रांतिकारी महामना जोतिबा फुले और क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले के बिना अधूरा ही नहीं अपूर्ण भी है। फुले दंपति ने अपने काल में सामाजिक परिवर्तन के लिए युग परिवर्तनकारी महान कार्य किए थे। उनके त्याग और बलिदान ने वंचितो और शोषितों को नया जीवन दिया था और उनमें ऊपर उठने का जजबा जगाया था। महाकारुणिक बुद्ध के बाद उन्नीसवी सदी में फुले दंपति ने समाज के दबे-कुचले और पिछड़े तबकों के लोगों के लिए काफी सराहनीय कार्य किए और उनको मानवीय अधिकार दिलाने के लिए अपना सबकुछ दाव पर लगा दिया था। अकसर कहा जाता आया है कि एक सफल पुरुष के पीछे एक स्त्री का हाथ होता है जिसमें स्त्री की भूमिका को कम ही आँकी गई है। पर वास्तव में सावित्रीबाई के जीवन से यह स्पष्ट हो जाता है की एक स्त्री पुरुष के पीछे नहीं बल्कि जब कँधे कँधे मिलाकर काम करती है तब इतिहास बदल जाता है और नए युग का निर्माण होता है। सावित्रीबाई फुले और जोतिबा फुले की शीलवान और चरित्रवान जोड़ी ने युगों का इतिहास बदल दिया और मानवीय अधिकारों को प्रस्थापित कर नए युग की नींव मजबूती से स्थापित की।

Keywords: *क्रांतिज्योति, महाकारुणिक, गुलामी, प्रतिबद्धता, प्रगतिवादी, सुसंस्कारित, सम्यक मार्ग, अज्ञान, अविद्या, शूद्र-अतिशूद्र*

आधुनिक भारत का इतिहास सामाजिक क्रांतिकारी महामना जोतिबा फुले और क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले के बिना अधूरा ही नहीं अपूर्ण भी है। फुले दंपति ने अपने काल में सामाजिक परिवर्तन के लिए युग परिवर्तनकारी महान कार्य किए थे। उनके त्याग और बलिदान ने वंचितो और शोषितों को नया जीवन दिया था और उनमें ऊपर उठने का जजबा जगाया था। महाकारुणिक बुद्ध के बाद उन्नीसवी सदी में फुले दंपति ने समाज के दबे-कुचले और पिछड़े तबकों के लोगों के लिए काफी सराहनीय कार्य किए और उनको मानवीय अधिकार दिलाने के लिए अपना सबकुछ दाव पर लगा दिया था। अकसर कहा जाता आया है कि एक सफल पुरुष के पीछे एक स्त्री का हाथ होता है जिसमें स्त्री की भूमिका को कम ही आँकी गई है। पर वास्तव में सावित्रीबाई के जीवन से यह स्पष्ट हो जाता है की एक स्त्री पुरुष के पीछे नहीं बल्कि जब कँधे कँधे मिलाकर काम करती है तब इतिहास बदल जाता है और नए युग का निर्माण होता है। सावित्रीबाई फुले और जोतिबा फुले की शीलवान और चरित्रवान जोड़ी ने युगों का इतिहास बदल दिया और मानवीय अधिकारों को प्रस्थापित कर नए युग की नींव मजबूती से स्थापित की।

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

शिक्षा एवं शिक्षक का सही कर्तुत्व निभाया

सावित्रीबाई फुले देश की प्रथम महिला शिक्षिका के रूप में जानी जाती है। जब महिला को पढ़ने का अधिकार नहीं था, घर की चार दीवारें ही उसकी दुनिया थीं, बहार निकलना बड़ा अपराध माना जाता था, ऐसे अँधकार युग में सावित्रीबाई फुले ने अध्ययन किया, शिक्षिका की बुनियादी तालिम ली, घर से बाहर निकलने की हिम्मत जुटाई और देश की प्रथम अध्यापिका बनकर महिलाओं के लिए शिक्षा के द्वार खोल दिए। सावित्रीबाई फुले की शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता, उत्साह और दृढ़ विश्वास ने उन्हें एक सशक्त, मजबूत और सामर्थ्यवान सकसियत बना डाला, जिसने दूसरी महिलाओं के मुक्ति के द्वार खोल दिए। उनके जीवनसाथी जोतिबा फुले की यह प्रगतिवादी सोच ही थी की महिला शिक्षा की शुरुआत अपने घर से ही होनी चाहिए। स्त्री-शिक्षा समाज के लिए कितनी अहम है, वह बात जोतिबा फुले भली भाँति जान गए थे। वे अकसर कहते थे की एक पुरुष जब शिक्षा पा लेता है तो वह स्वयं शिक्षित हो जाता है, पर जब घर की एक स्त्री शिक्षा पाती है तो पूरा घर शिक्षित हो जाता है। स्त्री की शिक्षा पूरे घर को सुसंस्कारित बना देती है।

सावित्रीबाई फुले क्रांतिकारी एवं प्रगतिवादी शिक्षिका थीं। वह शिक्षा को समाज परिवर्तन व बदलाव का अहम साधन मानती थीं। शिक्षा से स्वयं को दृढ़ बनाना, मन को गुलामी से मुक्त बनाना और प्रवर्तमान अँधविश्वास, गलत परंपराओं के खिलाफ आवाज उठाना शिक्षा का असली मकसद होना चाहिए ऐसा उनका दृढ़ मानना था। वह कहती थीं की अगर आप शिक्षा से अपनी गुलामी की बेड़ियों को काट न सको तो शिक्षा का क्या मतलब है। शिक्षा आपकी और दूसरों की मुक्ति का जरिया न बनें वह शिक्षा किस काम की। एक अच्छे समाज का निर्माण तभी होता है जब स्त्री और पुरुषों को समान अधिकार मिलें, समान रूप से शिक्षा के अवसर प्राप्त हो, समान रूप से प्रगति के हर सारे अवसर सुगम हो। सावित्रीबाई फुले स्वयं शिक्षित हुई और ओरों के लिए भी शिक्षा के द्वार खोल दिए। 'सावित्रीबाई फुले ने अपने निस्वार्थ त्याग, सामाजिक प्रतिबद्धता, वैचारिक स्पष्टता-सरलता तथा अपने अथक-सार्थक प्रयासों से महिलाओं और शोषित समाज को शिक्षा पाने का अधिकार दिलवाया। सावित्रीबाई फुले ने धार्मिक अँधविश्वास व रूढ़ियो को तोड़कर निर्भयता और बहदुरी से घर-घर, गली-गली घूमकर सम्पूर्ण स्त्री समाज व शूद्र-अछूत समाज के लिए शिक्षा की क्रांतिज्योति जलाई।' (शांतिस्वरूप बौद्ध, पृ. ७)

सावित्रीबाई फुले ने एक श्रेष्ठ एवं सच्चे शिक्षक का कर्तुत्व जीवन भर निभाया। सन १८४८ में पुणे के भिड़ेरवाड़े में कन्या पाठशाला की नींव रखकर सावित्रीबाई फुले और जोतिबा फुले ने सदियों से जमीं धूल को उड़ाने का युग-परिवर्तन कार्य कर दिखाया। १८४८ से लेकर १८५२ के चार सालों में फुले दंपती ने पुणे और इसके आसपास के इलाकों में १८ पाठशालाओं की स्थापना कर सदियों से चली आ रही गलत परंपराओं व रूढ़िवादी खयालों को तोड़कर महिला शिक्षा के अप्रतिम कार्य को साकार कर दिखाया। लड़कियों के लिए स्कूल शुरू करना एक साहसिक कदम था क्योंकि रूढ़िवादी और दकियानूसी समाज शुरू से ही कन्या शिक्षा का घोर विरोधी रहा था। पर सावित्रीबाई फुले स्वयं पढ़ी और लड़कियों को पढ़ाने का अभूतपूर्व कार्य किया। सावित्रीबाई फुले, सगुणाबाई और फातिमा शेख गली-गली जाकर अछूतों, शूद्रों एवं मुस्लिम समाज के लड़के-लड़कियों और उनके माता-पिता को समझाने का कार्य कर उन्हें अपनी स्कूलों में दाखिला करवाती थीं। वे सब उन्हें मुफ्त में पढ़ाती थीं। शिक्षा की ज्योति को उन्होंने प्रज्वलित किया और अनेकों बच्चों के अँधकार भरे जीवन में शिक्षा की रोशनी जगाई। यह शिक्षा की अनुपम क्रांति थीं।

एक शिक्षक का सही कर्तव्य हैं कि वह समाज के दबे-कुचले, शोषित तबकों के लिए कुछ सार्थक काम करें। सावित्रीबाई फुले ने उपेक्षित वर्गों के लिए 'शिक्षा क्रांति' की ज्योति जलाकर नये युग का प्रारम्भ किया। कन्याओं और अछूत बच्चों के लिए पाठशालायें खोली। १ मई १८५२ के दिन फुले दंपति ने वेताल पेठ में अछूत बच्चों के लिए एक पाठशाला प्रारम्भ की। पूरे देश में अस्पृश्य वर्ग के लिए स्थापित की गई यह पहली पाठशाला थी। इस पाठशाला की मुख्याधिपिका भी सावित्रीबाई ही बनी। इस पाठशाला के बारें में तत्कालीन 'पूणे ओब्जर्वर' समाचार पत्र के २९ मई १८५२ के अंक में निम्नलिखित जानकारी दी गई हैं :

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY
Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal
ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

"परोपकार की भावना से प्रेरित माली जाती के व्यक्ति ने अपने खर्च से अस्पृश्य वर्ग के लिए एक पाठशाला स्थापित की है, यह जानकर भारत के सुधारवादी लोगों की बहुत खुशी होगी। यह पाठशाला वेताल पेट में होने से यहाँ महार, मांग और पखारी जैसी जातियों के बच्चों को पढ़ाया जाता है।" (रजनी तिलक, पृ. २६)

शिक्षा को समाज हित का साधन बनाया

शिक्षा समाज और राष्ट्र हित का साधन बन सकती है, जब शिक्षा की बागडोर सही और कर्तव्यनिष्ठ लोगों के हाथों में हो। भारतीय इतिहास में देखा जाय तो शिक्षा पर एक ही जाति का वर्चस्व रहा हैं, जिससे समाज का प्रत्येक वर्ग शिक्षा से वंचित रहा और गुलामों से बदतर जीवन जीता रहा। प्राचीन भारत में महाकारुणिक बुद्ध के प्रयासों के बाद १९ वीं सदी में जोतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले ने ही समाज के दबे-कुचले, उपेक्षित, अछूत वर्गों के लिए शिक्षा क्रांति की मुहिम चलाई थीं। फुले दंपति स्वयं सुशिक्षित हुए और शिक्षा को समाज हित का साधन बनाया। केवल शिक्षा देना उनका कर्तव्य नहीं था पर लोगों में तार्किक और वैज्ञानिक चिंतन बढ़े तथा लोग स्वयं अपनी बेबसी, गुलामी का सही अर्थ ढूँढ सके और इसमें से बाहर निकलने का सम्यक मार्ग खोज निकाल सके यही उद्देश्य था। शिक्षा को समाज परिवर्तन का साधन बनाया।

सावित्रीबाई फुले दार्शनिक और तर्कशील चिंतक थी। उनका पूरा जीवन समाज के वंचित तबकों खासकर महिला, अछूत और शूद्र बहुजनों के लिए संघर्ष और सहयोग में बिता। एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सावित्रीबाई फुले निर्भीक रूप से कुशल कर्म कर रही थी और साहित्य की रचना से लोगों की पीड़ाओं को अभिव्यक्ति देकर उनमें अपने दयनीय जीवन से उभारने के लिए संघर्ष करना भी सिखाती थीं। 'समता, बंधुता, मैत्री और न्यायपूर्ण समाज की लड़ाई के लिए, सामाजिक क्रांति को आगे बढ़ाने के लिए सावित्रीबाई फुले ने साहित्य की रचना की। आज भी यह बात बहुत कम लोग जानते है कि वे एक सजग, तर्कशील, भावप्राण, जुझारू क्रांतिकारी कवयित्री थी। मात्र 23 साल की उम्र में आए उनके पहले काव्य-संग्रह 'काव्य फुले' में उन्होंने धर्म, धर्मशास्त्र, धार्मिक पाखंडो और कुरीतियों के खिलाफ जम कर लिखा। औरतों की सामाजिक स्थिति पर कविताएँ लिखीं। और उनकी बुरी स्थिति के लिए जिम्मेदार धर्म, जाति, ब्राह्मणवाद और पितृसत्ता पर कड़ा प्रहार किया। सावित्रीबाई फुले अपनी कविता में दलितों और बहुजनों को समाज में बैठी अज्ञानता को पहचान कर उसे पकड़कर कुचल-कुचल कर मारने के लिए कहती है, क्योंकि यह अज्ञानता यानी अशिक्षा ही दलित बहुजन और स्त्री समाज की दुश्मन है। जानबूझकर सोची-समझी साजिश के तहत पूरे वंचित समूह को शिक्षा से दूर रखा गया है। ताकि वे कभी सवर्ण समाज के बराबर न आ सके।" (अनिता भारती, १५)

साहित्य को समाज परिवर्तन और बदलाव का वाहक बनाया

सावित्रीबाई फुले ने साहित्य के माध्यम से वंचित और उपेक्षित बहुजनसमाज को जागृत करने का काम किया। उन्होंने अपने जीवन-काल में दो काव्यग्रंथों की रचना की। उनका पहला कविता-संग्रह १८५४ में **'काव्या-फुले'** नाम से प्रकट हुआ जब वे मात्र तेईस वर्ष की थीं। उनका दूसरा कविता-संग्रह **'बावन्नकशी सुबोधरत्नाकर'** १८९१ में आया, जिसको उन्होंने अपने जीवनसाथी ज्योतिबा फुले के परिनिर्वाण प्राप्ति के बाद उनकी जीवनी रूप में लिखा था। उनकी कलम ने गलत मान्यताओं, गलत परंपराओं, मिथ्या रूढ़ियों एवं अंधविश्वास, अज्ञानता से एक ओर लोगों को जागरूक बनाया और तो दूसरी ओर उनमें अन्याय, अज्ञानता, अंधविश्वास के खिलाफ लड़ने का जजबा जगाया। एक कविता में वह 'अज्ञानता' को असली दुश्मन बता कर वह कहती है कि अशिक्षा रूपी अज्ञानता ही पूरे बहुजन समाज को गुलाम बनाकर रखा है और हमें शिक्षा पाकर ज्ञान-प्रज्ञा का दिया जलाना है।

"एक ही शत्रु है हम सभी का
उसे पीट-पीटकर मार भगा देंगे
उसके सिवा कोई दूसरा

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY
Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal
ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

दुश्मन नहीं है हमारा।
उसका नाम है अज्ञान
उसे घर-दबोचो, मजबूत पकड़कर पीटो
और उसे जीवन से भगा दो।" (अनिला भारती, ९२)

शिक्षा के महत्व को सावित्रीबाई फुले बखूबी जानती थीं और शिक्षा से ही अज्ञानता, अविद्या की जड़ो को काटा जा सकता है। वह स्वयं शिक्षित हुई और अंधविश्वास, अविध्या में जी रहे बहुजन वंचित समुदायों को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया था। उनकी एक का शीर्षक है, 'शिक्षा के लिए जाग्रत हो जाओ'। इस कविता में वे आह्वान करती हैं कि अतिशूद्र (अछूत) भाइयों जागो ! गुलामी कि परंपरा को तोड़ दो और शिक्षा ग्रहण करो -

अरे भाइयों ! अतिशूद्रों !
जागो, उठो, खड़े हो जाओ
खत्म करो यह परंपरा में
चली आ रही बँधी गुलामी
अरे भाइयों ! जागो अब तो
शिक्षा ग्रहण करो आगे बढ़।
बाल-बच्चों को हम पढ़ाएँ
हमें भी पढ़ना है
विद्या पाकर ज्ञान बढ़ाएँ
नीतिधर्म भी सीखें।
करो नया संकल्प कि हम सब
प्राप्त करेंगे ज्ञान आधुनिक
विद्या का संचय करके सब
शूद्र का धब्बा मिटाएँगे अब। (अनिला भारती, ९३)

अज्ञानता एवं रूढ़िवादिता से शूद्रों-अतिशूद्रों का जीवन निसहाय, लाचार और पराधीन हो गया है। सावित्रीबाई फुले को इस बात का बहुत दुख होता था कि शूद्रों-अतिशूद्रों को बेहतर जीवन के सारे सपने मर गए हैं। 'उनके भीतर जीवन जीने का उत्साह और उमंग नहीं बचा है। उन्होंने मान लिया है कि दुख, अपमान और पराधीनता ही उनकी नियति है। उन्होंने ब्राह्मणों की इस बात को मान लिया है कि बिना किसी इच्छा के कर्म कराते जाओ, चाहे तुम्हें इसका फल मिले या न मिले। वे अच्छी तरह समझती थीं कि शूद्रों-अतिशूद्रों के कर्मों का सारा फल ब्राह्मण हड़प लेते हैं और बिना फल कि चिंता किए खटते रहने का उपदेश देते हैं-

शूद्रों-अतिशूद्रों की दरिद्रता के लिए
अज्ञानता व रूढ़िवादी
रीति-रिवाज हैं जिम्मेदार
परंपरागत बेड़ियों में बँधे-बँधे सब
पिछड़ गए हैं सबसे देखो
जिसका यह परिणाम है कि हम
झुलस गए तेजाब में गरीबी के
नहीं रहा अहसास कोई भी
सुख-सम्मान, अधिकार का
न कोई आशा और इच्छा
आत्मसात सुखी ही अपने को (सिद्धार्थ, ४४)

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

'उसे इंसान कहें क्यों?' कविता में सावित्रीबाई फुले सही मायने में शिक्षित कि व्याख्या करती है। इस कविता में कौन इंसान, कौन नहीं? किसका जीवन इंसानी है; किसका पशुवत? इस पर प्रश्न उठाती हैं। वे कहती हैं कि जिसके पास ज्ञान नहीं है; शिक्षा नहीं है; उसका जीवन पशुवत है। लेकिन, इसके साथ वे यह भी कहती हैं कि यदि कोई व्यक्ति ये दोनों चीजें प्राप्त कर लें, लेकिन उसके आधार पर अपना जीवन न जिए; तो उस व्यक्ति का भी जीवन पशुवत है -

नहीं ज्ञान, न ही है विद्या
न इच्छा पढ़ने-लिखने की
बुद्धि होकर चले न उस पर
ऐसे बुद्धिहीन व्यक्ति को
कैसे कहो, कहे इंसान? (सिद्धार्थ, ९२)

शिक्षा-विद्या मनुष्य जीवन के लिए कितनी महत्वपूर्ण है इसके बारें में सावित्रीबाई फुले **'विद्या दान'** नामक निबंध में लिखती है कि "परावलम्बन, आलस, फ़िजूलखर्ची आदि जैसे दुर्गुणों को अंकुरित होने से रोकने व नष्ट करने, सद्गुणों को विकसित करने में यदि कोई दान उपयुक्त है, तो वह है - विद्यादान। विद्या देने वाला व विद्या लेने वाला दोनों ही नेकी की राह पर चलकर अच्छे व आदर्श इंसान बनते हैं। इसी विद्या व ज्ञान रूपी धम्म की ऊर्जा पाकर मनुष्य की पशुता का लोप हो जाता है। विद्या देने वाला धैर्यशाली, हिम्मतवाला, निडर होता है; तो विद्या को स्वीकार करने वाला होशियार, शीलवान, सामर्थ्यशाली हो जाता है।"

शिक्षा के क्षेत्र में अप्रतिम काम करने वाली क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले और महामना जोतिबा फुले को भारत सरकार द्वारा सर्वोच्च नागरिक सन्मान 'भारतरत्न' प्रदान किया जाना चाहिए क्योंकि उन दोनों ने जो काम किया है उसकी मिसाल मिलना मुश्किल है। आज हम साधन संपन्न होने के बावजूद एक बच्चे को पढ़ाने की जिम्मेवारी नहीं ले सकते जबकि फुले दंपति ने अपने युग में कई बच्चों को पढ़ाया और कई सारी पाठशालाएं स्थापित कर शिक्षा आंदोलन चलाया था और शिक्षा को हरेक वर्गों के लिए मुहैया कराया था।

संदर्भ:

1. बौद्ध, शांति स्वरूप, क्रांतिबाई सावित्रीबाई फुले की अमर कहानी, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१६
2. रजनी तिलक, भारत की पहली शिक्षिका सावित्री माई फुले, बुक्स इंडिया, दिल्ली, २०११
3. अनिता भारती, सावित्रीबाई फुले की कविताएं, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१५

http://vidyajournal.org